**Seema Shukla Ojha**
**seema.ojha@gmail.com**

# सीखने के प्रतिफल की प्राप्ति: इतिहास के सन्दर्भ में

**सार**

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् ने हाल ही में 'प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल' शीर्षक से एक ऐसा दस्तावेज तैयार किया जिसमें प्रारंभिक स्तर के समस्त पाठ्यचर्या क्षेत्रों के सीखने के प्रतिफलों को उनकी पाठ्यचर्या सम्बन्धी अपेक्षाओं और शिक्षणशास्त्रीय प्रक्रियाओं के साथ प्रस्तुत किया गया है। इस दस्तावेज का मुख्य उद्देश्य विद्यालयों में सीखने की गुणवत्ता को बढ़ाना व शिक्षकों को इस योग्य बनाना है कि शिक्षक बिना विलम्ब सभी विद्यार्थियों के लिए सीखने के कौशलों को अधिक उपयुक्त रूप से सुनिश्चित करते हुए सुधारात्मक कदम उठा सकें। सीखने के ये प्रतिफल न केवल प्रत्येक कक्षा के शिक्षकों को सीखने-सिखाने पर ध्यान केंद्रित करने में सहायता करेंगे, बल्कि ये अभिभावक/संरक्षक, समुदाय के सदस्यों और राज्य पदाधिकारियों को पूरे देश के विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में उनकी भूमिका-निर्वाह में सहायक होंगे ताकि विभिन्न पाठ्यचर्या क्षेत्र से अपेक्षाओं की पूर्ति हो सके। इस लेख में उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय के अंतर्गत आने वाले ऐसे ही एक विषय 'इतिहास' से सीखने के एक प्रतिफल को उदाहरण के तौर पर लेते हुए यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि कक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान सतत और व्यापक मूल्यांकन का उपयोग करते हुए कैसे बच्चे उन प्रतिफलों की प्राप्ति कर सकते है जो उनसे अपेक्षित हैं।

शिक्षा की गुणवत्ता का मुद्दा विश्वव्यापी है। वैश्विक स्तर पर स्थायी लक्ष्यों के अनुरूप ही भारत में निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 बनाया गया जिसमें 6 -14 वर्ष के प्रत्येक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार दिया गया।यह अधिनियम सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पर भी बल देता है जो कि शिक्षक को प्रत्येक बच्चे की सीखने सम्बन्धी प्रगति को समझने, कमियों को पहचानने, समय-समय पर उन्हें दूर करने तथा तनावरहित वातावरण में उनकी वृद्धि तथा विकास में सहायता करता है। इसी का अनुसरण करते हुए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् ने प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर सतत एवं व्यापक मूल्यांकन सम्बन्धी पैकेज भी तैयार किये। इन पुस्तकों में विषयानुसार उपयुक्त उदाहरणों के साथ सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के सम्बन्ध में समझ बनाई गयी कि कैसे सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का उपयोग करें।इस तरह वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थी और शिक्षक के अलावा माता-पिता, समुदाय के सदस्य और शैक्षिक प्रशासकों ने भी विद्यार्थियों के सीखने के बारे में जानने और उसके अनुसार बच्चों की सीखने सम्बन्धी प्रगति पर नज़र बनाये रखने की आवश्यकता महसूस की। इसके लिए उन्हें ज़रुरत हुई कुछ ऐसे मानदंडों की जिनकी सहायता से वे अपेक्षित सीखने के स्तर का आकलन व उसका पता लगा सकें। हालाँकि सीखने की निरंतरता को ध्यान में रखते हुए व्यवस्था को यह जानकारी देना कि बच्चे ने सटीक रूप से क्या सीखा है, एक चुनौती भरा कार्य है। तथापि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् ने प्रयास कर ‘प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल’ शीर्षक से एक ऐसा दस्तावेज तैयार किया जिसमें प्रारंभिक स्तर के समस्त पाठ्यचर्या क्षेत्रों के सीखने के प्रतिफलों को उनकी पाठ्यचर्या सम्बन्धी अपेक्षाओं और शिक्षणशास्त्रीय प्रक्रियाओं के साथ प्रस्तुत किया गया है (रा.शै.अनु.एवं प्र.प., 2017,पृ.vii)। इस दस्तावेज का मुख्य उद्देश्य विद्यालयों में सीखने की गुणवत्ता को

बढ़ाना व शिक्षकों को इस योग्य बनाना है कि शिक्षक बिना विलम्ब सभी विद्यार्थियों के लिए सीखने के कौशलों को अधिक उपयुक्त रूप से सुनिश्चित करते हुए सुधारात्मक कदम उठा सकें। शैक्षिक सत्र 2017-18 से कक्षा एक से आठ तक के विद्यार्थियों के सीखने के स्तर से सम्बंधित विशेष रूप से निर्धारित मानदंडों को अब नियमों में शामिल कर लिया गया है जिनका क्रियान्वयन अनिवार्य है। ये प्रतिफल आज इस मायने में और महत्वपूर्ण हो जाते हैं क्यूंकि सभी राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों में प्रारंभिक स्तर की सभी कक्षाओं में अधिगम न्यूनता की पहचान हेतु किया जाने वाला राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण अब इन्ही प्रतिफलों पर आधारित है। सीखने के ये प्रतिफल न केवल प्रत्येक कक्षा के शिक्षकों को सीखने-सिखाने पर ध्यान केंद्रित करने में सहायता करेंगे, बल्कि ये अभिभावक/संरक्षक, समुदाय के सदस्यों और राज्य पदाधिकारियों को पूरे देश के विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में उनकी भूमिका-निर्वाह में भी सहायक होंगे ताकि विभिन्न पाठ्यचर्या क्षेत्र से अपेक्षाओं की पूर्ति हो सके।

इस लेख में उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय के अंतर्गत आने वाले ऐसे ही एक विषय 'इतिहास' से सीखने के एक प्रतिफल को उदाहरण के तौर पर लेते हुए यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि कक्षा में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान सतत और व्यापक मूल्यांकन का उपयोग करते हुए कैसे बच्चे उस प्रतिफल की प्राप्ति कर सकते है जो उनसे अपेक्षित है।

इतिहास के छात्रों के लिए ऐतिहासिक घटनाओं और अवधारणाओं को जानना और समझना आवश्यक होता है। इसके साथ ही उनसे आमतौर पर इतिहास के अध्ययन में उपयोग किए जाने वाले विभिन्न आलोचनात्मक कौशलों जैसे ऐतिहासिक साक्ष्य का विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन करने की क्षमता के इस्तेमाल की भी उम्मीद की जाती है। हालांकि, वास्तविकता में ज्ञान और कौशल के इन घटकों को अक्सर एक दूसरे से अलग-अलग देखने की प्रवृत्ति दिखती है। फलतः इतिहास, अधिकतर तथ्यों के संग्रह के रूप में पढ़ाया जाता है। लेकिन जिस तरह से आज इतिहास पढ़ाया जाता है- व्याख्यान के रूप में, पाठ्यपुस्तक पठन, मात्र याद रखने और परीक्षा के लिए- यह न केवल छात्रों के लिए उबाऊ है, बल्कि इतिहास की शिक्षा प्रदान करने में भी अप्रभावी है। सत्य कहा जाय तो, इतिहास को जानने के लिए, जो जाना है उसकी जांच-पड़ताल के लिए, उसको पुष्ट करने के लिए आलोचनात्मक कौशल का अधिग्रहण और उपयोग करना सीखना जरूरी है। आलोचनात्मक कौशल को विषय सामग्री से जोड़ने के लिए, शिक्षण का फोकस 'सीखने की प्रक्रिया' पर होना चाहिए। जब विषय सामग्री का इस तरह उपयोग होता है तभी सोचने-विचारने को प्रोत्साहन मिलता है। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षक 'इतिहास' को छात्रों के सम्मुख एक बनी-बनाई सामग्री के रूप में प्रस्तुत न कर छात्रों को सीखने के जीवंत और रचनात्मक तरीकों का इस्तेमाल करते हुए स्वयं अपने ज्ञान सृजन की अनुमति दें।

निम्नलिखित उदाहरण छात्रों को प्राथमिक स्रोतों की समझ बनाने में मदद हेतु और सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के साथ विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से नीचे उल्लिखित सीखने के प्रतिफल (कक्षा 6 से) प्राप्त करने के लिए बनाया गया है।यह उदाहरण निर्देशात्मक नहीं है और इसमें स्थानीय आवश्यकताओं व संसाधनों के अनुरूप बदलाव किये जा सकते हैं। यह उदाहरण अंततः आलोचनात्मक कौशल के लिए आधार विकसित करने में सहायक होगा जो न केवल इस प्रतिफल को प्राप्त करने में मदद करेगा बल्कि इससे इतिहास में अन्य प्रतिफलों की प्राप्ति में भी मदद मिलेगी।

**सीखने का प्रतिफल:**

- विभिन्न प्रकार के स्रोतों (पुरातात्विक, साहित्यिक आदि) की पहचान करता है और इस अवधि के इतिहास के पुनर्निर्माण में उनके उपयोग का वर्णन करता है (रा.शै.अनु.एवं प्र.प., 2017,पृ.96)।

**प्रारंभिक चर्चा / प्रश्न उत्तर**

छात्रों के आलोचनात्मक कौशल को प्रोत्साहित/प्रेरित करने के लिए सही प्रश्न पूछना बहुत महत्वपूर्ण है। छात्रों के साथ होने वाली यह आरंभिक चर्चा और उनकी प्रतिक्रियाओं से शिक्षक को छात्रों के मौजूदा ज्ञान को

जानने का मौका मिलता है।

शिक्षक ब्लैकबोर्ड पर 'प्राथमिक स्रोत' शब्द लिखता है, छात्रों को इस पर प्रतिक्रिया करने के लिए कुछ समय देता है और फिर उनसे इन शब्दों को अपने शब्दों में या चित्रों के माध्यम से समझाने को कहता है।

कुछ मिनटों के बाद शिक्षक छात्रों से "प्राथमिक स्रोत क्या हैं" के बारे में सोचने के लिए कहता है। छात्र तरह-तरह के उत्तर देते हैं, जैसे "स्रोत जो हम उपयोग करते हैं," "बहुत पहले इस्तेमाल किए जाने वाले स्रोत" और "इतिहासकारों को स्रोतों की आवश्यकता होती है।"

(छात्रों के जवाब शिक्षक को यह आकलन करने में सहायता करते हैं कि वे स्रोतों के बारे में कितना अधिक या कितना कम जानते हैं)।

छात्रों को अब उन सभी गतिविधियों के बारे में सोचने के लिए कहा जाता है जिनमें वे पिछले 24 घंटों के दौरान शामिल थे। इसके साथ ही उन्हें इसके लिए कोई सबूत प्रदान करने के लिए कहा जाता है जो यह साबित करता हो कि वे पिछले 24 घंटों के दौरान इन गतिविधियों में मौजूद थे। छात्रों द्वारा कई उत्तर दिए जाते हैं, जैसे कि:

"मेरे पिता ने मुझे अपने घर पर कल अपना होमवर्क करते देखा था। " यह छात्र सुझाव देता है कि उसके पिता उसकी इस बात की पुष्टि कर सकते हैं।

एक और छात्र जवाब देता है, "मैं कल अपने दोस्त के घर गया था।" इस मामले में, दोस्त इस बात की पुष्टि कर सकता है कि वह उसके घर गया था।

(यह शिक्षक को यह आकलन करने में सहायता करता है कि प्राथमिक स्रोत सम्बन्धी छात्रों की अवधारणा उनके दैनिक अनुभवों पर आधारित है लेकिन यह अभी स्पष्ट रूप से परिभाषित अवधारणा के रूप में नहीं है। इसलिए वह छात्रों को प्राथमिक स्रोत के विभिन्न पहलुओं को समझने में मदद करने के लिए और जांच-पड़ताल करता है)। छात्रों से पूछा जाता है, "क्या ऐसे कोई जवाब हैं जो आपकी उस गतिविधि/ उस स्थिति में मौजूदगी के सबूत है लेकिन ऐसे सबूत हैं जो लोगों पर निर्भर नहीं हैं?" बच्चे सोचना शुरू करते हैं। एक छात्र जवाब देता है: "मैं कल एक डॉक्टर के पास गया और उन्होंने मेरे लिए कुछ दवाएं सुझाई थीं' तो यह परचा मेरी वहाँ मौजूदगी का सबूत हो सकता है ।एक और जवाब, "मेरी उपस्थिति स्कूल में उपस्थिति रजिस्टर में चिह्नित की गई है।"

सभी छात्र अपने अनुभव के आधार पर कुछ कहने की कोशिश करते हैं। वे इस अभ्यास का आनंद ले रहे हैं और शिक्षक उनमें से प्रत्येक को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित कहता है।

(उनका आनंद इस विषय में उनकी रुचि और भागीदारी बताता है, इसलिए शिक्षक प्रत्येक छात्र को कुछ कहने के लिए प्रेरित करता है और साथ ही उन्हें यह समझने में मदद करता है कि किसी चीज़ के बारे में जानने के लिए कई स्रोत हो सकते हैं)।

अब तक उन्होंने जो कुछ भी सीखा है उसे और मजबूत करने के लिए छात्रों को अपने दादा दादी या परदादा दादी के बारे में अपने परिवार के सदस्यों से बात करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और प्रत्येक को उन 2-3 चीज़ों के बारे में संक्षेप में लिखने के लिए कहा जाता है जिससे उन्हें इन लोगों के बारे में जानने में मदद मिलती है।

(शिक्षक संकेत देता है कि यह चीज़ एक तस्वीर या एक पत्र या उनके बारे में कोई भी चीज़ हो सकती है या उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली कोई चीज़ भी हो सकती है)।

अगले दिन शिक्षक को पता चलता है कि कक्षा में बहुत शोर है जहां सभी छात्रों के पास साझा करने के लिए कुछ न कुछ है। चर्चा शुरू होती है और प्रत्येक छात्र, जो उसने तैयार किया है उसे साझा करता है। एक छात्र कहता है, "मेरे पिता ने मुझे बताया कि मेरे परदादा को घड़ियों का बहुत शौक था और उसके पास एक स्विस घड़ी भी थी जो अभी भी हमारे पास है हालांकि यह अब काम नहीं करती है।" एक छात्र टिप्पणी करता है, "हम कैसे मान लें कि तुम झूठ नहीं बोल रहे हो? "

इसके लिए वह जवाब देता है, "मुझे पापा ने मेरे परदादाजी की एक तस्वीर दी है जहां आप भी देख सकते हैं कि उन्होंने वही घड़ी पहन रखी है"। इस तरह सभी छात्र-छात्राएं अपने दादा दादी / परदादा दादी के बारे में

कुछ न कुछ बताने का प्रयास करते हैं।

(यह चर्चा शिक्षकों को चीजों की पहचान, संग्रह और प्रस्तुत करने में छात्रों के प्रयासों का आकलन करने में मदद करती है। यह शिक्षक को पाठ्य सामग्री को छात्रों के वर्तमान जीवन के साथ जोड़ने में भी मदद करता है और इस मिथक को दूर करता है कि इतिहास में केवल अत्यंत पुरानी घटनाओं और मृत लोगों का ही अध्ययन किया जाता है। विचारों के इस आदान-प्रदान के माध्यम से छात्रों को यह समझने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि कैसे उनके लेख/ प्रतिक्रियाएं अतीत में घटी किसी घटना या स्थान या लोगों के बारे में एक कहानी बताते हैं और इस तरह ये प्राथमिक स्रोत हैं)।

प्राथमिक स्रोतों के बारे में चर्चा जारी रहती है और छात्रों को कई अलग-अलग प्राथमिक स्रोत दिखाए जाते हैं जैसे कि मातृदेवी, मुहरों, बर्तन, कलाकृतियों, शिलालेखों के अंश, पुरास्थलों, इमारतों और स्मारकों की प्रतिकृतियां/चित्र और इस बात पर चर्चा होती है कि क्यों और कैसे प्रत्येक स्रोत प्राचीन भारत के इतिहास को जानने के लिए प्रासंगिक है।

से चीजों को पढ़ना और देखना शुरू कर देंगे और एक विषय के रूप में इतिहास से जुड़े एक महत्वपूर्ण बिंदु को समझ सकेंगे, कि किसी भी घटना का कोई भी विवरण, वह चाहे कितना ही निष्पक्ष रूप से प्रस्तुत किया गया हो, अनिवार्य रूप से व्यक्तिपरक है। एक बार जब छात्र इस तरह के निर्देशित अभ्यास/प्रश्नों से परिचित हो जाते हैं, तब हम धीरे-धीरे उन्हें जटिल व्याख्या और विश्लेषण के अभ्यास दे सकते हैं)।

(विभिन्न प्रकार के प्राथमिक स्रोतों की प्रस्तुति न केवल प्राथमिक स्रोतों के बारे में एक उत्कृष्ट और संवादात्मक चर्चा करने में मदद करती है बल्कि ऐतिहासिक सोच के अधिक परिपक्व स्तरों की नींव बनाने में भी मदद करती है। इन स्रोतों की समीक्षा करते समय निरंतर निर्देश और चर्चा के माध्यम से छात्रों को यह समझने में मदद मिलती है कि कैसे इतिहासकार इन प्राथमिक स्रोतों के ज़रिये अतीत की कहानी बताने का प्रयास करते हैं)।

प्राथमिक स्रोतों की इस बेहतर समझ के साथ, शिक्षक अगली गतिविधि करता है और यह जानने के लिए कि छात्रों ने अब तक क्या सीखा है छात्रों को एक अंश प्रदान करता है।

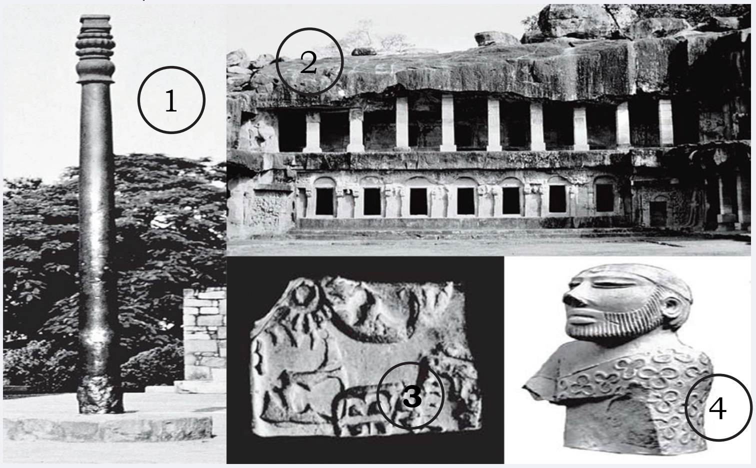


**चित्र:** 1 लौह स्तम्भ, मेहरौली (दिल्ली),
2 जैन मठ (ओडिशा),
3. आहत सिक्का
4. मोहनजोदड़ों से मिली पत्थर से बनी एक मूर्ति

(यहां हमें यह याद रखना होगा कि स्रोतों के साथ छात्रों को परिचित कराने और इन स्रोतों को समझने में उनकी सहायता करने के लिए निरंतर मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। इसके लिए हमें छात्रों में अधिक से अधिक प्रश्न पूछने की आदत डालनी होगी। इसके अलावा, यदि शिक्षक कुछ स्रोतों को विस्तार से समझने/ देखने में छात्रों की मदद करें, तो इस बात की पूरी सम्भावना है कि धीरे-धीरे छात्र गंभीर रूप

अपने एक अभिलेख में अशोक ने यह बात कही :
''राजा बनने के आठ साल बाद मैंने कलिंग विजय की।
लगभग डेढ़ लाख लोग बंदी बना लिए गए। एक लाख से भी ज्या दा लोग मारे गए।
इससे मुझे अपार दुख हुआ। क्यों ?
जब किसी स्वपतंत्र देश को जीता जाता है तो लाखों लोग मारे जाते हैं और बहुत सारे बंदी बनाए जाते हैं। इसमें ब्राहृण और श्रमण भी मारे जाते हैं।

जो लोग अपने सगे - संबंधियों और मित्रों को बहुत प्याार करते हैं तथा दासों और म़तकों के प्रति दयावान होते हैं, वे भी युद्ध में या तो मारे जाते हैं या अपने प्रियजनों को खो देते हैं। इसीलिए मुझे पश्चाोताप हो रहा है। अब मैंने धम्मत पालन करने एवं दूसरों को इसकी शिक्षा देने का निश्चय किया है। मैं मानता हूँ कि धम्मह के माध्य म से लोगों के दिल जीतना बलपूर्वक विजय पाने से ज्यामदा अच्छौ है। मैं यह अभिलेख भविष्यो के लिए एक संदेश के रूप में इसलिए उत्कीवर्ण कर रहा हूँ कि मेरे बाद मेरे बेटे और पोते भी युद्ध न करें। इसके बदले उन्हें यह सोचना चाहिए कि धम्मद को कैसे बढ़ाया जाए।''

हमारे अतीत, कक्षा VI के लिए इतिहास की पाठ्यपुस्तक से लिया गया अशोक के अभिलेख का एक अंश, पृ.79

शिक्षक उन्हें पहले से ही यह बता देता है कि यह गतिविधि किस बारे में है और इस सम्बन्ध में उनसे क्या अपेक्षा है। वह उन्हें प्रश्नों का एक सेट प्रदान करता है (ओझा सीमा एस.2016, पृ.59 -61)। वह छात्रों के साथ परामर्श से तैयार एक मूल्यांकन रुब्रिक भी प्रदान करता है। वह बताता है कि एक इतिहासकार जो इस या किसी अन्य अंश के बारे में अधिक जानना चाहता है, उसके बारे में अधिक से अधिक प्रश्न पूछेगा। शिक्षक उनके साथ चर्चा करता है कि स्रोत पर किये गए प्रश्न स्रोत में निहित जानकारी को समझने और उसका उपयोग करने में मदद करते हैं। इसके लिए वह एक सिक्के का उदाहरण देते हुए कहता है कि,

"हम सभी जानते हैं कि सिक्का इतिहास का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। लेकिन तरह-तरह के सवाल जैसे कि यह किस प्रकार से बनाया गया था, यह कहां पाया गया था, यह कब जारी किया गया था, इसे कब जारी किया गया था, किसने इसे जारी किया, और इस पर कौन से प्रतीक हैं सिक्के को एक अलग ही अर्थ और संदर्भ प्रदान करते हैं और इस तरह ये इसे इतिहास का एक महत्वपूर्ण स्रोत बना देते हैं। ऐतिहासिक स्रोत और अनुसंधान को आगे बढ़ाते हुए, इसी स्रोत पर जब नए-नए प्रश्न पूछे जाते हैं, इस बात की संभावना होती है कि नए उत्तरों से सिक्का जारी किए जाने के काल के बारे में अलग-अलग निष्कर्ष हमारे सामने आ सकते हैं।"

इस तरह शिक्षक यह स्पष्ट करता है कि एक व्यावहारिक इतिहासकार की तरह जो इस तरह से स्रोतों की जांच करता है, स्कूलों में इतिहास का अध्ययन करने वाले शिक्षक और छात्र भी सभी प्रकार के स्रोतों पर सवाल उठा सकते हैं और विषय को और गहराई के साथ समझ सकते हैं।

इसके बाद शिक्षक छात्रों के समूह बनाने में छात्रों की मदद करता है। एक समूह में 4-5 छात्र- छात्राएं होते हैं। सभी को कहा जाता है कि वे दिए गए अंश को ध्यान से पढ़ें और फिर अपने समूह के सदस्यों के साथ महत्वपूर्ण शब्दों या विचारों पर चर्चा करें और आखिरकार दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखें। प्रत्येक समूह में एक छात्र को जवाब लिखना है और दूसरे छात्र को जवाब पढ़ना है। छात्रों को अंश पढ़ने के दौरान एकत्र किए गए सभी शब्दों या विचारों की एक सूची भी बनानी है।

निम्नलिखित प्रश्न दिए जाते हैं :

1. स्रोत की पहचान करें?
2. क्या यह एक पत्र है, एक शिलालेख, एक समाचार पत्र लेख, या एक तस्वीर?
3. इसे किसने लिखा / लिखवाया है?

क्या यह एक प्रत्यक्षदर्शी द्वारा अथवा घटना में शामिल व्यक्ति द्वारा लिखा विवरण है, या फिर यह किसी ऐसे के द्वारा लिखा गया है जिसने इस घटना के बारे में सुना है या शोध किया है ?

4. यह कब लिखा गया था?

वर्णित घटनाओं के समय या बाद में?

5. यह किसके लिए और क्यों लिखा गया था?
6. अतीत के बारे में यह अंश क्या कहता है?
7. महत्वपूर्ण शब्द क्या हैं और उनका क्या मतलब है? यह किसके बारे में है?
8. क्या इसमें जो लिखा है उस पर हम विश्वास कर सकते हैं ? क्या यह व्यक्ति वहां मौजूद था?

क्या यह विश्वसनीय है? क्या जानकारी सही है? क्या यह पक्षपातपूर्ण है? दूसरे शब्दों में यह किसका नजरिया है ?

9. उस समय का इतिहास लिखने में क्या यह अंश उपयोगी होगा?

अशोक के समय पर शोध करने वाले इतिहासकार के लिए यह शिलालेख कितना उपयोगी है?

शिक्षक को पता चलता है कि ज्यादातर छात्र पहले 2 प्रश्नों का जवाब दे देते हैं कि यह अशोक द्वारा लिखवाये गए शिलालेख से लिया गया अंश है, और इस तरह यह एक प्राथमिक स्रोत है। **(शिक्षक यहां आकलन करता है कि छात्र जो भी सीख रहे हैं उसका उपयोग करने में सक्षम हैं।)**

प्रश्न 4 के संबंध में छात्रों का कहना है कि कलिंग युद्ध के दौरान हुए नरसंहार ने अशोक पर गहरा प्रभाव डाला, वह पछतावे से भर गया। नतीजतन उसने अपनी भविष्य की पीढ़ी के साथ-साथ सामान्य लोगों को भी युद्ध से दूर रखने के लिए शिलालेख में अपने विचारों को अंकित कराने का फैसला किया।

प्रश्न संख्या 5 के लिए छात्रों के जवाब अलग-अलग होते हैं लेकिन फिर भी वे एक ही विषय के आसपास घूमते है। एक छात्र कहता है, "इससे हमें पता चलता है कि राजाओं ने युद्ध लड़े और अन्य क्षेत्रों पर अधिकार किया और यह कि युद्ध में हर कोई प्रभावित होता है।" एक और छात्र बताता है, "यह राजा के पश्चाताप के बारे में भी बताता है। अशोक ने बहुत सारा रक्तपात देखने के बाद युद्ध नहीं करने का फैसला किया"।

(शिक्षक छात्रों के विचारशील अवलोकनों से बहुत खुश है)

दो प्रश्न जो छात्रों को काफी चुनौतीपूर्ण प्रतीत होते हैं, वे हैं प्रश्न संख्या 3 (यह कब लिखा गया था? वर्णित घटनाओं के समय या बाद में?) और 7 (क्या इसमें जो लिखा है उस पर हम विश्वास कर सकते हैं ? क्या यह व्यक्ति वहां मौजूद था?)। पहले तो, छात्रों को पता ही नहीं चलता कि प्रश्न संख्या 3 के लिए वे अपनी जांच कहां से शुरू करें, इसलिए शिक्षक उनसे पूछते हैं, "क्या आपको इस अंश से कुछ पता चलता है कि कलिंग पर कब विजय प्राप्त की गई थी?" इसके लिए कुछ छात्रों ने जवाब दिया, "हां यहां बताया गया है कि अशोक ने राजा बनने के 8 साल बाद कलिंग पर विजय प्राप्त की। "शिक्षक कहता है कि अगर वह उन्हें वह तारीख बता दें जब अशोक राजा बना था तो क्या वे कलिंग युद्ध की तारीख का पता लगा पाएंगे ? कुछ छात्र 'हां' कहते हैं लेकिन उनके चेहरे से शिक्षक यह जान जाता है कि वे बहुत निश्चित नहीं हैं। तब वह एक सुराग प्रदान करता है कि 269 ईसा पूर्व में अशोक का औपचारिक राज्याभिषेक हुआ था। फिर छात्रों से पूछा जाता है: "जानकारी के आधार पर, क्या आप यह बता सकते हैं कि यह अभिलेख कब लिखा गया था?"

छात्र कुछ बता नहीं पाते। इसलिए शिक्षक उन्हें बताता है कि चूंकि तारीख ई. पू. में है, इसलिए अगर अशोक 269 ईसा पूर्व में राजा बना और राजा बनने के 8 साल बाद कलिंग पर विजय प्राप्त की, तो उन्हें इस तारीख से 8 साल घटाने होंगे और यदि वे ऐसा करते हैं तो देखते हैं कि इस शिलालेख की तारीख 261 ईसा पूर्व आती है।

प्रश्न 6 के संबंध में एक छात्र भ्रमित दिखाई देता है और कहता है कि "शिलालेख में शब्द 'धर्म' को 'धम्म' के रूप में गलत तरीके से लिखा गया है। शिक्षक तब बताते हैं कि 'धम्म' संस्कृत 'धर्म' जैसा ही है लेकिन यहां प्राकृत में लिखा गया है। वह यह भी बताती है कि अशोक के अधिकांश शिलालेख प्राकृत में हैं।

(शिक्षक छात्र के अवलोकन को देखकर खुश है। अन्य छात्रों को भी यह संकेत मिलता है कि कक्षा में न केवल 'सही उत्तर जानना' बल्कि प्रश्न पूछना या संदेह व्यक्त करना भी सीखने का एक महत्वपूर्ण पहलू है)।

प्रश्न 7 के संबंध में एक छात्र कहता है, "शिलालेख अशोक द्वारा कलिंग विजय और उसके पश्चाताप के बारे में है।" एक और छात्र कहता है कि, "अशोक स्वयं इस शिलालेख में लोगों को संबोधित कर रहा है और कलिंग के लोगों के खिलाफ हुई भयानक हिंसा पर पश्चाताप कर रहा है " लेकिन वे इसकी विश्वसनीयता, पूर्वाग्रह और दृष्टिकोण के बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं बता पाते हैं।

इस पर शिक्षक बताता है कि चूंकि यह अशोक का अपना आदेश है जहां वह वही कह रहा है जो उसने स्वयं अनुभव किया है यह भरोसेमंद विवरण लगता है। वह यह भी बताता है कि मौर्य शासन और शासकों का उल्लेख

बाद के साहित्यिक विवरणों जैसे पुराण, बौद्ध और जैन विवरणों आदि में मिलता है। लेकिन अन्य प्रकार के स्रोतों की तुलना में अशोक के शिलालेखों की महत्ता अधिक इसलिए है क्योंकि ये समकालीन और उत्कीर्णित हैं और अभिलेखों का तिथिक्रम निर्धारण अपेक्षाकृत विश्वसनीय है। वह विद्यार्थियों का ध्यान 'विजय' शब्द पर दिलाता है और बताता है कि अशोक निष्पक्ष प्रतीत होता है क्योंकि यहां वह युद्ध की निंदा हारने के बाद नहीं बल्कि जीत के बाद कर रहा है। उसने वास्तव में युद्ध की भयावहता महसूस की और अब वह लोगों को ऐसे युद्धों से दूर रखने के लिए राजी करने की कोशिश कर रहा है। इसी क्रम में वह धम्म के बारे में बात करता है जो देखा जाये तो सभी धर्मों में मान्य समान नैतिक सिद्धांतों के अलावा कुछ भी नहीं है। इसलिए इसे एक संतुलित और निष्पक्ष विवरण माना जा सकता है।

अधिकांश छात्र जवाब देते हैं कि इस समय के इतिहास के बारे में लिखने के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण स्रोत होगा। छात्र समझते हैं कि भौतिक या पुरातात्विक सामग्री का तिथि निर्धारण साहित्यिक स्रोतों की तुलना में अधिक विश्वसनीयता से किया जा सकता है यही कारण है अक्सर इतिहासकारों द्वारा इनका अधिक निर्भरता के साथ उपयोग किया जाता है। **(शिक्षक हालांकि, उन्हें सावधान करता है कि किसी भी अवधि की सार्थक समझ के लिए मात्र एक प्रकार के स्रोत पर निर्भर रहना उचित नहीं है।)**

जैसे-जैसे गतिविधि समाप्त होती है, शिक्षक छात्रों को बताता है कि उन्होंने अभी जो कुछ किया है, यानि कि एक अंश को पढ़ना और व्याख्या करना-यह वैसा ही है जो इतिहासकार प्राथमिक स्रोतों के साथ करते हैं।

(यह आदान-प्रदान शिक्षक को यह आकलन करने में मदद करता है कि कैसे कुछ बच्चे रुचि, जिज्ञासा दिखा रहे हैं और खुद को आश्वस्त करने के लिए प्रश्न पूछकर जानकारी का विश्लेषण कर रहे हैं। वह यह भी देख रहा है कि कैसे कुछ छात्रों द्वारा किये गए प्रश्न पूरी कक्षा को बेहतर तरीके से सीखने में मदद कर रहे हैं। यदि चर्चा के दौरान उचित प्रश्न / टिप्पणियां नहीं होतीं, तो शिक्षक स्वयं कुछ प्रश्न उठाता है)।

जैसे-जैसे विषय पर चर्चा अंत की ओर आती है, शिक्षक पूछता है, "अब जबकि हम प्राथमिक स्रोतों के बारे में इतना जान चुके हैं तो क्या अब हम इसे पुनः अपनी भाषा में परिभाषित कर सकते हैं? इस तरह पूरी कक्षा 'प्राथमिक साक्ष्यों' की नयी परिभाषा बनाती है कि 'वे चीजें जो अतीत में किसी की मौजूदगी साबित करे और इस तरह हमें उस समय के बारे में बताये प्राथमिक साक्ष्य/ स्रोत ' है' और "स्रोत मूल रूप से अतीत में घटी घटनाओं और मानव गतिविधियों के निशान हैं। अतीत की घटनाएं अब मौजूद नहीं हैं, लेकिन कुछ समय पहले ये मौजूद थीं। उनके द्वारा छोड़े गए निशानों से हमें उन घटनाओं का पता चलता है। एक इतिहासकार घटनाओं का पुनर्निर्माण करने के लिए इन 'निशानों ' (यानी स्रोत) की सहायता लेता है "।

(शिक्षक देखता है कि छात्रों ने प्राथमिक स्रोतों की उचित समझ हासिल कर ली है, वे विभिन्न प्रकार के प्राथमिक स्रोतों की पहचान करने में सक्षम हैं, उनके उपयोग का वर्णन करते हैं और इसे अपने जीवन से जोड़ सकते हैं। इसी उदाहरण को आगे ले जाते हुए छात्रों को स्रोतों के आधार पर 'प्राचीन', 'मध्ययुगीन' और 'आधुनिक' अवधि में अंतर करने और इन कालावधियों के उदाहरण प्रदान करने के लिए कहा जा सकता है)।

इस पूरी शिक्षणशास्त्रीय प्रक्रिया के आकलन हेतु शिक्षक निम्नलिखित रुब्रिक का इस्तेमाल करता है।

| मानदंड | स्तर 4 | स्तर 3 | स्तर 2 | स्तर 1 |
|---|---|---|---|---|
| स्रोतों की पहचान | विभिन्न प्रकार के स्रोतों की पहचान करता है और पाठ्यपुस्तक आधारित तथा स्थानीय परिवेश | विभिन्न प्रकार के स्रोतों (प्राथमिक, द्वितीयक) की पहचान करता है लेकिन इनके उदाहरण नहीं दे पाता। | विभिन्न प्रकार के स्रोतों की कुछ समझ ही प्रदर्शित करता है। जैसे अमुक पुरातात्विक स्रोत है | विभिन्न प्रकार के स्रोतों की कोई समझ नहीं दिखाता। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | जैसे हस्तलिपि, अभिलेख, धार्मिक लेख, पुरातात्त्विक खोज पर आधारित उदाहरण देता है। | | अमुक लिखित स्रोत है लेकिन प्राथमिक और द्वितीयक के बीच फर्क नहीं बता पता और न ही उदाहरण दे पाता है। | |
| महत्वपूर्ण मुद्दों तथा मुख्य बिंदुओं की पहचान करना | प्राथमिक स्रोतों में निहित महत्वूपर्ण मुद्दों तथा मुख्य बिंदुओं को पहचानता है। | प्राथमिक स्रोतों में निहित अधिकतर महत्वपूर्ण मुद्दों तथा मुख्य बिंदुओं की पहचान कर पाता है। | प्राथमिक स्रोतों में निहित कुछ अवधारणा तथा मुद्दों को सामान्य तौर पर बता पाता है। | प्राथमिक स्रोतों में शामिल महत्वपूर्ण मुद्दों तथा मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में लेकिन अस्पष्ट रूप से बताता है। |
| ऐतिहासिक सन्दर्भ का ज्ञान | स्रोत को लिखे जाने वाले या स्रोत सृजन संबंधी काल के बारे में पूर्ण ज्ञान प्रदर्शित करता है तथा स्रोत को उस विशेष ऐतिहासिक सन्दर्भ से जोड़ पाता है जिसमें उसका सृजन हुआ या वह लिखा गया। | सामान्य ऐतिहासिक ज्ञान प्रदर्शित करता है लेकिन स्रोत को विशिष्ट ऐतिहासिक सन्दर्भ से जोड़ नहीं पाता। | ऐतिहासिक सन्दर्भ का सीमित ज्ञान है। | ऐतिहासिक सन्दर्भ की जानकारी नहीं दिखा पाता है। |
| स्रोतों का विश्लेषण | स्रोत संबंधी गहन अध्ययन तथा व्याख्या कर पाता है, तथ्यों तथा विचारों में भेद कर पाता है, लेखक की विश्वसनीयता का पता लगाता है, लेखक तथा अन्य लोगों के विचारों की तुलना कर पाता है। | स्रोत का सही विश्लेषण कर पाता है। | स्रोत के संबंध में बहुत सीमित समझ प्रदर्शित करता है। | स्रोत से संबंधित कुछ तथ्यों को दोहराता है लेकिन किसी प्रकार का विश्लेषण तथा व्याख्या नहीं कर पाता। |

## सन्दर्भ


- ओझा एस.एस. (2016). यूज़िंग सोर्सेज इन हिस्ट्री टीचिंग. *एम आई ई आर जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल स्टडीज, ट्रेंड्स एन्ड प्रैक्टिसेज*, (6),1.
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्. (2017). *प्रारंभिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल*. नई दिल्ली, भारत: रा.शै.अनु. एवं प्र. प.
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्. (पुनर्मुद्रित 2017). *हमारे अतीत-I*, नई दिल्ली, भारत: रा.शै.अनु. एवं प्र. प.